बपतिस्मा आत्मिक खतने के रूप में

''उसी में तुम्हारा ऐसा खतना हुआ है, जो हाथ से नहीं होता, अर्थात मसीह का खतना, जिस से शारीरिक देह उतार दी जाती है। और उसी के साथ बपतिस्मा में गाड़े गए, और उसी में परमेश्वर की शक्ति पर विश्वास करके, जिस ने उस को मरे हुओं में से जिलाया, उसके साथ जी भी उठे। और उसने तुम्हें भी, जो अपने अपराधों, और अपने शरीर की खतनारहित दशा में मुर्दा थे, उसके साथ जिलाया, और हमारे सब अपराधों को क्षमा किया'' (कुलुस्सियों 2:11-13)।

बपतिस्मे के बारे में, कुलुस्सियों 2:11-13 पर चर्चा करने से पहले आइए देखते हैं कि कुलुस्सियों की पुस्तक लिखने का पौलुस का क्या उद्देश्य था। कुलुस्सियों में उसका मुख्य ज़ोर यीशु की महानता का चित्रण था। उसने यीशु को मनुष्य की बड़ी से बड़ी आवश्यकताओं का उज़र बताया और ज़ोर देकर कि यीशु में हमें छुटकारा, अर्थात पापों की क्षमा मिलती है (कुलुस्सियों 1:14)। यीशु के महान गुणों को जानकर (कुलुस्सियों 1:15-18) उसके प्रति हमारा विश्वास बढ़ना चाहिए।

पौलुस ने ऐलान किया कि मसीही लोगों को अंधकार से निकालकर परमेश्वर के पुत्र के राज्य में लाया गया है (कुलुस्सियों 1:13)। इसका अर्थ यह हुआ कि इस पत्र के लिखे जाने के समय (1) यीशु राजा था, (2) उसका राज्य था (3) क्षमा मिलती थी, और (4) लोग उसके राज्य में आ रहे थे। यीशु ने पौलुस (शाऊल) को दर्शन देकर बताया था कि वह उसे अन्यजातियों के पास भेज रहा है ''कि तू उनकी आंखें खोले, कि वे अंधकार से ज्योति की ओर, और शैतान के अधिकार से पमरेश्वर की ओर फिरें; कि पापों की क्षमा, और उन लोगों के साथ जो मुझ पर विश्वास करने से पवित्र किए गए हैं, मीरास पाएं'' (प्रेरितों 26:18)। अंधकार से ज्योति में आने वाले वे लोग हैं जिनके पाप क्षमा किए गए हैं और जो यीशु के राज्य में हैं।

यीशु में हमें छुटकारा अर्थात पापों की क्षमा मिलती है (कुलुस्सियों 1:14)। यीशु का लहू परमेश्वर से हमारे बिगड़े सम्बन्धों को सुधार सकता है (1:20-22)।

इसके अतिरिक्त, यीशु इसलिए महान है क्योंकि वह परमेश्वर का प्रतिरूप (1:15); सारी सृष्टि में पहलौठा (1:15); सारी वस्तुओं का सृष्टिकर्ता (1:16); सब वस्तुओं में

प्रथम (1:17); सब वस्तुओं को स्थिर रखने वाला (1:17); देह अर्थात कलीसिया का सिर (1:18); मरे हुओं में से जी उठने वालों में पहलौठा (1:18); और सब बातों में प्रधान है (1:18)।

पौलुस ने यीशु के बारे में उपरोक्त बुनियादी तथ्य यह दिखाने के लिए बताए कि हमें किसी को अपने प्रभु के रूप में उससे दूर करने की अनुमति नहीं देनी चाहिए (2:4, 8)। उसमें बुद्धि और ज्ञान के सारे भंडार (2:3), देह के रूप में ईश्वरत्व की सारी परिपूर्णता (2:9), हमें भरपूर करने की क्षमता (2:10) और यीशु का खतना मिलते हैं जो बपतिस्मा लेने पर हमारे पापों को मिटा देते हैं (2:11-13)। इन सच्चाइयों से हमें यीशु में विश्वास रखने के कारण मिल जाने चाहिए ताकि हम मनुष्यों द्वारा दी गई शिक्षाओं और व्यवस्था में दी गई आज्ञाओं को नकार सकें (2:8, 14-17)।

यदि हमारे पास यीशु नहीं है, तो हम आशा रहित और परमेश्वर के बिना हैं; परन्तु यदि हम उसमें हैं, तो हमें उसके लहू के द्वारा निकट लाया जाता है। इफिसियों 2:13 कहता है, ''पर अब तो मसीह यीशु में तुम जो पहले दूर थे, मसीह के लहू के द्वारा निकट हो गए हो।''

हमारी महिमा की आशा मसीह में हमारे होने और उसके हम में होने से है (कुलुस्सियों 1:27)। उसमें हमें शारीरिक अभिलाषाओं के दासत्व से छुड़ाकर आत्मिक रूप में जीवित किया जाता है और सारे अपराध क्षमा किए जाते हैं। (कुलुस्सियों 2:11-13)।

अध्याय 2 में पौलुस ने कुलुस्से के मसीहियों से आग्रह करना जारी रखा कि मसीह में बने रहें। उसने उन्हें बताया कि वे यीशु के हैं ज़्योंकि उन्हें उससे एक आत्मिक खतना मिला था। यह आत्मिक खतना ज़्या है ?

बपतिस्मा खतने की तरह है

> उसी में तुज्हारा ऐसा खतना हुआ है, जो हाथ से नहीं होता, अर्थात मसीह का खतना, जिस से शारीरिक देह उतार दी जाती है (कुलुस्सियों 2:11)।

परमेश्वर ने इब्राहीम और उसके वंशज़ों के साथ वाचा बांधी कि यदि वे उस वाचा की मोहर के रूप में खतना करवाएं तो वह उनका परमेश्वर होगा (उत्पज़ि 17:7-11)। खतना न करवाए हुए नर बालकों को उनके लोगों में से निकाला जाना था (उत्पज़ि 17:14)।

पौलुस ने आत्मिक अर्थ में बपतिस्मे की तुलना खतने से की: जैसे खतने में बच्चे का शारीरिक मांस उतार दिया जाता था वैसे ही मसीही व्यज़्ति के हृदय से पापपूर्ण अभिलाषाओं का निकाला जाना आवश्यक है। बपतिस्मे की तुलना खतने से करके, पौलुस ने समझाया कि बपतिस्मे में आत्मिक खतना होता है। बपतिस्मे में, शारीरिक अभिलाषाओं और रीतियों को उतारकर आत्मिक खतना किया जाता है (कुलुस्सियों 2:11)।

''उतारना'' (यू.: *apekdusis*) वाज़्यांश ''पिछले जीवन से स्पष्ट सज़्बन्ध तोड़ने का सुझाव है, तौभी यह रूपक नापसन्द कपड़े उतारने का एक रूपक है।''[1] जिस खतने का यहां वर्णन है वह ''*बिना हाथ लगाए होता है,* अर्थात यह पूर्णतया परमेश्वर का काम है। ... पौलुस ज़ोर देकर कह रहा है कि यह बपतिस्मे में मिलने वाला परमेश्वर का काम है।''[2] (मरकुस 14:58 और 2 कुरिन्थियों 5:1 में इससे मिलते-जुलते वाज़्यांश मिलते हैं।)

हो सकता है कि ''शारीरिक देह'' ''पाप के शरीर'' (रोमियों 6:6) और ''मृत्यु की देह'' (रोमियों 7:24) को भी कहा गया। शरीर और मांस पाप नहीं हैं, जैसा कि इस तथ्य से सिद्ध होता है कि यीशु देह में आया (यूहन्ना 1:14; रोमियों 1:3), परन्तु पाप इनके द्वारा हमें अपनी ओर आकर्षित करता है। ''देह'' से पौलुस का अभिप्राय शारीरिक अभिलाषाओं से था जिनके द्वारा पापपूर्ण वस्तुएं हमें परीक्षा में डालती हैं। एक अर्थ में शारीरिक वस्तुओं की ये अभिलाषाएं, बपतिस्मे में शामिल आत्मिक बातों से मिटा दी जाती थीं।

खतने (कुलुस्सियों 2:11) और बपतिस्मे (2:12) में सज़्बन्ध स्पष्ट है। पौलुस आगे कहना चाहता है कि मसीह का खतना बपतिस्मे में पूरा होता है।

मुर्रे हैरिस का कहना है, ''मन के खतने की यह बात आपके बपतिस्मे के समय हुई थी जब आप परमेश्वर की सामर्थ के काम में अपने विश्वास से आत्मिक रूप से उसमें जी उठे थे, तो परमेश्वर जिसने यीशु को मुर्दों में से जिलाकर उस सामर्थ का प्रदर्शन किया था।''[3]

बपतिस्मे का अर्थ

> और उसी के साथ बपतिस्मा में गाड़े गए, और उसी में परमेश्वर की शज़्ति पर विश्वास करके, जिस ने उस को मरे हुओं में से जिलाया, उसके साथ जी भी उठे (कुलुस्सियों 2:12)।

कुलुस्सियों की पत्री में अलग-अलग दिखाया गया है कि ''बपतिस्मे'' से ज़्या अभिप्राय है:

(1) कुछ लोगों ने यह मान लिया है कि पौलुस आत्मा के (पानी के नहीं) बपतिस्मे का हवाला दे रहा था, परन्तु ऐसा नहीं हो सकता। बपतिस्मे के हवालों के बारे में, अलब्रेट ओपके का विचार है, कि ''संदर्भ में संकेत न होने तक बपतिस्मे के बारे में नये नियम के हवालों को पानी के बपतिस्मे के रूप में ही मानना चाहिए। तकनीकी रूप से बपतिस्मे का अर्थ 'जल में बपतिस्मा देना' ही है। इसलिए माध्यम का विशेष रूप से उल्लेख करना आवश्यक नहीं।''[4]

हमारे उद्धार का आत्मिक भाग परमेश्वर द्वारा पाप के शरीर को उतारकर पाप को क्षमा करने का कार्य है। हमारा योगदान परमेश्वर के काम में विश्वास करके बपतिस्मा लेने में है।

(2) दूसरों का कहना है कि पौलुस अक्षरश: बपतिस्मे के बजाय सांकेतिक का हवाला दे रहा था, परन्तु यह भी सत्य नहीं है। यदि बाइबल की दूसरी आयतों में बपतिस्मे

को सांकेतिक माना गया हो, तो ऐसे निष्कर्ष की कोई मान्यता हो सकती है; परन्तु अन्य वाक्यों से यह संकेत मिलता है कि बपतिस्मा दिखाई देने वाला कार्य है जिसमें पानी शामिल है (मत्ती 3:13-17; प्रेरितों 8:35-39)।

(3) एक और विचार के अनुसार, पौलुस यह सिखा रहा था, कि परमेश्वर लोगों के मनों में उद्धार करने वाला विश्वास डाल देता है जिसका परिणाम बपतिस्मा होता है। टीकाकारों के एक ग्रुप ने लिखा है, ''यीशु को फिर से जीवित करने के परमेश्वर के सामर्थी काम में विश्वास ही, उद्धार दिलाने वाला विश्वास है (रोमियों 4:24; 10:9); और यह उसके उसी 'सामर्थ के काम' से मन में काम करता है जिससे उसने 'यीशु को मुर्दों में से जिलाया' (इफि. 1:19, 20)।''[5]

परन्तु, खोए हुए के मन में परमेश्वर का विश्वास डालने की अवधारणा साम्प्रदायिक कलीसियाओं की रीतियों से उपजी है, परमेश्वर के वचन से नहीं। बाइबल सिखाती है कि विश्वास परमेश्वर का वचन सुनने से आता है (यूहन्ना 17:20; 20:30, 31; प्रेरितों 17:11, 12; रोमियों 10:17)।

(4) एक और विचार है कि बपतिस्मा लेने वाले का विश्वास परमेश्वर के किसी काम पर विश्वास करने के बजाय यीशु के पुनरुत्थान में होना चाहिए। बहुत कम टीकाकार ही इस व्याख्या को खोलकर बताते हैं।

(5) सबसे सही विचार यह है कि पौलुस बपतिस्मे की बात कर रहा था जिसमें बपतिस्मा लेने वाला अपना विश्वास परमेश्वर के काम में रख रहा है अर्थात उसी काम में जिससे यीशु को मुर्दों में से जिलाया गया कि वह यीशु की मृत्यु और उसके पुनरुत्थान से मिलने वाले उद्धार से मिलने वाले लाभ पा सके। यह संदर्भ से मेल खाता है और सबसे उचित व्याख्या है।

रॉल्फ पी. मार्टिन का कहना है:

> सो छुटकारे के मसीह के काम से मिलने वाले आत्मिक खतने का उज़र मसीही बपतिस्मा है जो बपतिस्मा लेने वालों की ओर से उनके व्यक्तिगत तौर पर ग्रहण करने की मांग करता है। इसका अर्थ है कि विश्वास की अत्यावश्यकता जो संस्कार के लिए नहीं बल्कि परमेश्वर के लिए है जो उस ''संस्कार'' में काम करता है, उद्धार करने वाली मसीह की मृत्यु और जी उठने की प्रभावकारी शक्ति में है जिसमें विश्वासी मर कर जी उठते थे और उन्हें ईश्वरीय जीवन के उस क्षेत्र में रखता है जिसमें पाप पर विजय पा ली गई (रोमियों 6:8-11)।[6]

हरबर्ट एम. कारसन का अवलोकन सही है:

> इसलिए मसीह के पुनरुत्थान में पहले ही दिखाया गया परमेश्वर का सामर्थपूर्ण काम विश्वासी के भरोसे की बात है। फिर तो तर्क इस प्रकार होगा: उन्होंने मसीह के पुनरुत्थान के तथ्य को स्वीकार कर लिया है। परमेश्वर की सामर्थ का सांकेतिक

> प्रदर्शन यही था, और उस सामर्थ पर भरोसा रखकर उन्हें मसीह के साथ एकता में एक आत्मिक पुनरुत्थान का पता चला था।[7]

जी. आर. बिसले-मुर्रे ने लिखा है:

> विश्वास के कार्य करने को केवल बपतिस्मे के लिए कहना जिसमें मनुष्य का व्यवहार कैसा भी होने के बावजूद परमेश्वर कार्य करता है, या बपतिस्मे में परमेश्वर के कार्य को समझना, या बपतिस्मे के बाद उपयुज़्त प्रत्युज़र बनाने के प्रमाण के रूप में पेश करना गलत है।[8]

बिसले-मुर्रे को बपतिस्मा लेने वाले में सक्रिय विश्वास की आवश्यकता लगी। जिस विश्वास की यहां बात हो रही है वह यीशु के जी उठने का तथ्य नहीं, बल्कि परमेश्वर के काम में विश्वास रखना है जो बपतिस्मा लेने से उसके जीवन में काम कर रहा है। उसने और भी कहा:

> ... विश्वास अपने आप में विश्वासी को मुर्दों में से जिलाने की शज़्ति नहीं रखता, ऐसा करने के लिए यह केवल परमेश्वर की ओर देख सकता है; इस वाज़्य के अनुसार बपतिस्मा लेने वाले के विश्वास के जवाब में परमेश्वर बपतिस्मे में मरने वाले को मुर्दों में से अपनी सामर्थ से जिलाता है। परमेश्वर द्वारा बपतिस्मा लेने वाले के सक्रिय विश्वास से अलग मरने वाले को जिलाने वाले बपतिस्मे पर विचार नहीं किया जाता।[9]

कमैंन्ट्री ऑफ़ द होली सक्रिप्चर्स: कोलोशियंस में, कार्ल ब्राउन ने लिखा है,

> फिर तो परमेश्वर को ऐसा दिखाया जाता है: जिसने उसे मुर्दों से जिलाया, ज़्योंकि न्याय वाज़्य चलता है: यदि परमेश्वर ने मसीह को मुर्दों में से जिलाया है, तो ज़्या वह मुझे भी नये जीवन के लिए उठा सकता है (तु. इफिसियों 1:19, 20)? ''परमेश्वर के ऐसे कार्य'' में विश्वास के द्वारा ही इसका अनुभव होता है।[10]

विलियम बार्कले ने लिखा है,

> ये केवल तभी हो सकता है जब कोई मनुष्य परमेश्वर के प्रभावकारी काम में अर्थात परमेश्वर की उस सामर्थ में विश्वास करता है जिसने यीशु मसीह को मुर्दों में से जिलाया। वह केवल तभी मान सकता है कि जिस सामर्थ ने यीशु मसीह को क्रूस के द्वारा लाया था और जिसने उसे जिलाया था वह उसके लिए भी वही काम कर सकती है।[11]

मेरविन आर. विंस्टन ने ज़ोर दिया है कि ऐसा परिवर्तन ''परमेश्वर के काम के विश्वास

से'' आता है, अर्थात, ''उस विश्वास से नहीं जिससे परमेश्वर काम करता है, बल्कि परमेश्वर के काम में आपके विश्वास से ... जैसा कि मसीह के पुनरुत्थान में दिखाया गया है।''[12]

रॉबर्ट जी. ब्रेचर और यूजीन ए. नाइडा ने अच्छा सार उपलब्ध कराया था:

> ... [कुलुस्सियों 2:12] के मुख्य भाग को ''जब तुम ने बपतिस्मा लिया, तो परमेश्वर ने तुम्हें अपनी सामर्थ से फिर से जिला दिया। उसने तुम्हें ऐसे उठा दिया जैसे मसीह के साथ। यह परमेश्वर की सामर्थ में तुम्हारे भरोसे के कारण हुआ'' कहा जा सकता है।[13]

बपतिस्मे का लाभ उसी व्यक्ति को मिलता है जिसका विश्वास है कि परमेश्वर की उसी सामर्थ से जिसने यीशु की मृत देह को जीवित किया, पाप में मरे हुए को आत्मिक जीवन मिल सकता है। यह विश्वास बपतिस्मा देने वाले प्रचारक, पानी या बपतिस्मा लेने के कार्य में या यीशु के पुनरुत्थान में नहीं बल्कि परमेश्वर के काम में विश्वास है जिसने यीशु को जिलाकर (शारीरिक या आत्मिक) जीवन देने की अपनी सामर्थ दिखाई। यदि कोई यह विश्वास कर सकता है कि परमेश्वर यीशु की मृत देह में नया जीवन डाल सकता है, तो निश्चय ही उसके विश्वास का यह ठोस आधार हो सकता है कि परमेश्वर उसे भी बपतिस्मा लेने पर आत्मिक जीवन और क्षमा दे सकता है।

बपतिस्मे के कार्य की वैधता उस विश्वास पर निर्भर करती है जिसमें परमेश्वर कार्य कर रहा है। ऐसे विश्वास के बिना बपतिस्मा लेना व्यर्थ व निरर्थक संस्कार ही है। बिना समझ और विश्वास के बपतिस्मा अपने आप में आत्मिक खतना नहीं है। या इससे कोई यीशु में फिर से जीवित नहीं हो सकता। परमेश्वर के काम में विश्वास करने के लिए, हमें यह समझ होनी आवश्यक है कि जब हम बपतिस्मा ले रहे होते हैं तो परमेश्वर काम कर रहा होता है। परमेश्वर हमारे पापों और पापपूर्ण अभिलाषाओं को मिटा रहा होता है और हमें अपने उस विश्वास के कारण कि वह ज़्या कर सकता है और ज़्या करेगा आत्मिक रूप से जिलाता है। ऐसा केवल तभी हो सकता है जब हम यीशु के साथ उसके गाड़े जाने और जी उठने में आते हैं। बपतिस्मे में हम शारीरिक और आत्मिक दोनों तरह से ऐसा करते हैं।

हमें यह निष्कर्ष निकालना होगा (1) कि जब हम जीवन और क्षमा देने के परमेश्वर के कार्य के आधार पर बपतिस्मा ले रहे होते हैं तो पौलुस ने उसे परमेश्वर के कार्य में विश्वास के रूप में देखा और (2) बपतिस्मे में ऐसे प्रभाव लाने की अपने आप में कोई सामर्थ नहीं है। बपतिस्मा वह क्षण होता है जिसमें परमेश्वर कार्य करता है। ज़्योंकि हमें यीशु के पुनरुत्थान से यह विश्वास करने का पर्याप्त प्रमाण मिल जाता है कि बपतिस्मे में यीशु के साथ गाड़े जाकर जी उठने पर परमेश्वर हमें भी एक नये आत्मिक जीवन के लिए जिलाने और पापों से क्षमा करने का काम कर सकता है।

जिलाए गए और क्षमा किए गए

> और उसने तुझें भी, जो अपने अपराधों, और अपने शरीर की खतनारहित दशा में मुर्दा थे, उसके साथ जिलाया, और हमारे सब अपराधों को क्षमा किया (कुलुस्सियों 2:13)।

जो लोग परमेश्वर की सामर्थ पर विश्वास करते हैं उन्हें बपतिस्मे के समय जीवित किया जाता है। पौलुस ने यह दिखाने के लिए कि ऐसा बदलाव होता है, दो रूपकों का इस्तेमाल किया (कुलुस्सियों 2:11–13)।

पौलुस ने बताया कि कुलुस्से के लोग बपतिस्मे से पहले "खतना रहित" अर्थात शारीरिक अभिलाषाओं के वश में थे। फिर उसने उन्हें "पाप में मरे हुए" अर्थात आत्मिक रूप से मुर्दा और अभी भी पाप से दूषित थे। बपतिस्मे में, एक बदलाव आया कि शारीरिक अभिलाषाओं को मिटाने से उनका आत्मिक खतना हो गया था और आत्मिक अर्थ में वे यीशु के पुनरुत्थान के साझी भी हो गए थे। परमेश्वर के काम में अपने विश्वास के कारण वे अब पाप में मरे हुए नहीं थे बल्कि जी उठे थे। जिस पाप के कारण उनकी पहले वाली स्थिति थी उससे बपतिस्मे में उनका आत्मिक खतना करके और आत्मिक रीति से उन्हें जिलाकर उतार दिया गया था। पौलुस ने कुलुस्सियों के सज़्बन्ध में कहा, "और उसने तुझें भी, जो अपने अपराधों, और अपने शरीर की खतनारहित दशा में मुर्दा थे, उसके साथ जिलाया, और हमारे सब अपराधों को क्षमा किया" (कुलुस्सियों 2:13)।

ए. टी. रॉबर्टसन ने पौलुस के संदेश का यह उपयुज़्त सार दिया है: "परमेश्वर ने जीवन दिया है, और वह देह और प्राण दोनों को जीवन दे सकता है। पौलुस उन लोगों को परमेश्वर की सामर्थ देने की पेशकश करता है जो संदेह करते हैं।"[14]

बाद में पौलुस ने सिखाया कि बपतिस्मे में यीशु के साथ गाड़े जाने और जी उठने के बाद ज़्या करना आवश्यक है।"सो जब तुम मसीह के साथ जिलाए गए, तो स्वर्गीय वस्तुओं की खोज में रहो, जहां मसीह वर्तमान है और परमेश्वर के दहिनी ओर बैठा है। पृथ्वी पर की नहीं परन्तु स्वर्गीय वस्तुओं पर ध्यान लगाओ" (कुलुस्सियों 3:1, 2)।

सारांश

विश्वास किए बिना लिया गया बपतिस्मा अधूरा है, बपतिस्मा लिए बिना परमेश्वर के काम में विश्वास मान्य नहीं है। उद्धार उस विश्वास पर ही हो सकता है जो परमेश्वर के काम पर आधारित है। हम बपतिस्मे में यीशु के गाड़े जाने और जी उठने में साझी होने की इच्छा करते हैं। यह वह विश्वास है जो कहता है कि परमेश्वर की जिस सामर्थ ने यीशु को मुर्दों में से जिलाया वही सामर्थ हमें भी एक नये जीवन के लिए जिला सकती है। यदि हमने यीशु के साथ परिवर्तन पा लिया है, तो हमें चाहिए कि अपने जीवनों को सांसारिक लक्ष्यों से स्वर्गीय लक्ष्य की ओर मोड़ दें।

पाद टिप्पणियां

[1]राल्फ पी. मार्टिन, *कोलोशियंस एण्ड फिलेमोन,* द न्यू सैंचुरी बाइबल कमैंट्री, सामा. संस्क. मैथ्यू ज़्लैक (इंग्लैंड: मार्शल, मौरगन एण्ड स्कॉट, 1973; रीप्रिंट, ग्रैड रैपिड्स, मिशी.: Wm. B. ईर्डमैंस पज़्लिशिंग कं., 1985), 81. [2]वहीं 82. [3]मुर्रे जे. हैरिस, *कोलोशियंस एण्ड फिलेमोन* (ग्रैड रैपिड्स, मिशी.: Wm. B. ईर्डमैंस पज़्लिशिंग कं., 1991), 112. [4]अलब्रेट ओपके, *''बैपटिज़ो, ''थियोलोजिकल डिज़्शनरी ऑफ़ द न्यू टैस्टामेंट,* अंक 1, सं. गेरहर्ड किटल, अनु. ज्योफरी डज़्ल्यू ब्रोमिले, (ग्रैड रैपिड्स, मिशी.: Wm. B. ईर्डमैंस पज़्लिशिंग कं., 1964), 539. [5]रॉबर्ट जैमियसन, ए. आर. फॉसेट, एण्ड डेविड ब्राउन, *कमैन्ट्री ऑन द होल बाइबल* (ग्रैड रैपिड्स, मिशी.: ज़ोन्डरवन, 1961), 1321. [6]राल्फ पी. मार्टिन, *कोलोशियंस: द चर्च 'स लॉर्ड एण्ड द क्रिश्चियन 'स लिबर्टी* (एग्ज़ेटर: द पेटरनोस्टर प्रैस, 1972), 87. [7]हरबर्ट एम. कारसन, *स्टैण्ड परफेक्ट इन विज़्डम* (ग्रैड रैपिड्स, मिशी.: बेकर, 1981), 110. [8]जी. आर. बिसले-मुर्रे, *बैपटिज़्म इन द न्यू टैस्टामेंट* (ग्रैड रैपिड्स, मिशी.: Wm. B. ईर्डमैंस पज़्लिशिंग कं., 1977), 273. [9]वहीं, 364. [10]कार्ल ब्राउन, *कमैन्ट्री ऑन द होली सक्रिप्चर्स: कोलोशियंस* अंक 3, नया संस्क., सं. पीटर लेंज, अनु. एम. बी. रिडल (ग्रैड रैपिड्स, मिशी.: ज़ोंडरवन, 1969), 46.

[11]विलियम बार्कले, *द लैटर टू द फिलिपियंस, कोलोशियंस एण्ड थेसलोनियंस,* संशो. संस्क., द डेली स्टडी बाइबल सीरीज़, (फिलाडेल्फिया: वैस्टमिनस्टर प्रैस, 1959), 168. [12]मेरविन आर, विनसेंट, *वर्ड स्टडीज़ इन द न्यू टैस्टामेंट,* अंक 3 (ग्रैड रैपिड्स, मिशी.: Wm. B. ईर्डमैंस पज़्लिशिंग कं., 1946), 489. [13]रॉबर्ट जी. ब्रेचर एण्ड यूजीन ए. नाइडा, *ए ट्रांसलेटर 'स हैंडबुक ऑफ़ पॉल 'स लैटर्स टू द कोलोशियंस एण्ड टू फिलेमोन* (न्यूयॉर्क: यूनाइटेड बाइबल सोसायटीज़, 1977), 58. [14]ए. टी. रॉबर्टसन, *पॉल एण्ड द इंटलैज़्चुवल्स: द एपिस्टल्स टू द कोलोशियंस,* संशो व सं. डज़्ल्यू. सी. स्ट्रिकलैंड (न्यू यॉर्क: डज़्लडे, डोरन एण्ड कं. 1928; रीप्रिंट, नैशविल्ले: ब्रौडमैन प्रैस 1959), 84.